

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 13, रहस्योद्घाटन 7, भीड़, और 8, अंतिम मुहर

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र 13, रहस्योद्घाटन 7, भीड़, और अध्याय 8, अंतिम मुहर है।

प्रकाशितवाक्य 7 में, और श्लोक 9 से शुरू करते हुए, जिसे हमने पहले पढ़ा था, हमें एक दूसरे समूह से परिचित कराया जाता है।

हमने देखा कि पहला समूह 144,000 था, संभवतः पुराने नियम की सैन्य कल्पना, इज़राइल की प्रत्येक जनजाति के योग्य लड़ने वाले सदस्यों की संख्या निर्धारित करने के लिए जनगणना करने की कल्पना। अब, वह भाषा परमेश्वर के नए लोगों, चर्च पर लागू होती है, जो उन्हें एक शक्तिशाली सेना के रूप में चित्रित करती है जो बाहर जाती है और युद्ध करती है। अध्याय 6 की घटनाओं के बीच, इस सवाल का जवाब देते हुए कि कौन खड़ा हो सकता है, यह शक्तिशाली सेना जिसे भगवान के उद्देश्य के लिए सील कर दिया गया है और संरक्षित किया गया है, युद्ध करने के लिए एक शक्तिशाली सेना के रूप में निकलती है।

लेकिन विडम्बना यह है कि वे ऐसा अपने पीड़ित वफ़ादार गवाह के माध्यम से करते हैं। अब, इसके विपरीत, श्लोक 9 में, हमें एक अन्य समूह से परिचित कराया जाता है, एक बड़ी भीड़ जो इतनी बड़ी थी कि कोई भी उसे गिन नहीं सकता था। और फिर, हमें वही प्रश्न पूछने होंगे।

यह समूह कौन है, और पहले समूह से उनका क्या संबंध है? सबसे पहले, आमतौर पर, दोनों समूहों को यदि पूरी तरह से अलग नहीं तो काफी हद तक अलग रखा जाता है। जिस तरह से उनका वर्णन किया गया है उसमें विरोधाभास पर ध्यान दें। पहला समूह स्पष्ट रूप से क्रमांकित है, 12 जनजातियों में से प्रत्येक से 12,000, जो 144,000 पर समाप्त होता है।

तो, पहला समूह स्पष्ट रूप से और स्पष्ट रूप से क्रमांकित है। दूसरे समूह को स्पष्ट रूप से अनगिनत कहा जाता है; अर्थात्, कोई भी संभवतः इसे क्रमांकित नहीं कर सकता। तो, उसके कारण, दोनों संभवतः एक जैसे नहीं हो सकते।

एक क्रमांकित है; दूसरे को क्रमांकित नहीं किया जा सकता। और उनमें से एक इस्राएल राष्ट्र तक ही सीमित है, दूसरे हर जनजाति और भाषा और भाषा के लोग हैं। तो, इस कारण से, अधिकांश उन्हें निष्पक्ष रूप से, यदि पूरी तरह से नहीं, तो दो अलग-अलग समूहों के रूप में एक दूसरे से अलग रखेंगे।

दूसरी बात यह है कि 144,000, जैसा कि हमने कहा, दृश्य बदल जाता है। 144,000 अब मेमने के सामने और भगवान के सिंहासन के सामने और मेमने के सामने खड़े हैं, उसी दृश्य को, सिंहासन कक्ष के दृश्य को, अध्याय 4 और 5 में पीछे से दर्शाते हैं। अब, यह असंख्य भीड़ अब

भगवान की उपस्थिति में खड़ी है, में खड़ी है प्रकाशितवाक्य 4 और 5 से सिंहासन कक्ष, ताकि अब उन्हें मूल रूप से अपना इनाम प्राप्त करने के रूप में चित्रित किया जा सके। उन्हें अंतिम मोक्ष प्राप्त करने के रूप में चित्रित किया गया है।

वे पुरस्कृत हैं; वे परमेश्वर की उपस्थिति में प्रमाणित हैं। तो, एक अर्थ में, फिर से, अध्याय 7 संतों के प्रश्न का उत्तर देना शुरू कर रहा है, वेदी के नीचे की आत्माएं जिनका उनकी वफ़ादारी के कारण सिर काट दिया गया है, जो चिल्लाते हैं, हे भगवान, कब तक? अब, एक अर्थ में, हम परमेश्वर के लोगों की अंतिम पुष्टि देखते हैं। अध्याय 7 के इस भाग में, ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपनी अंतिम नियति तक पहुँच गए हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि वे ईश्वर के सामने और उसके सिंहासन के सामने और स्वर्गीय दरबार में और स्वर्गीय सिंहासन कक्ष में मेमे के सामने खड़े होने के पुरस्कार में प्रवेश कर रहे हैं। और हम इसके बारे में थोड़ा और बात करेंगे और इसका क्या मतलब हो सकता है और इसमें क्या शामिल हो सकता है इसके बारे में थोड़ा बाद में बात करेंगे। लेकिन फिर सवाल ये है कि ये हैं कौन? क्या ये अध्याय 7 के समूह से बिल्कुल अलग हैं? और फिर, पहली बार पढ़ने पर ऐसा लगता है कि वास्तव में यही मामला है।

फिर, एक को क्रमांकित किया गया है, एक को नहीं। एक का सम्बन्ध इस्राएल के गोत्र से है। अन्य हर जनजाति और भाषा और भाषा के लोग हैं।

एक तो जाहिरा तौर पर पृथ्वी पर पाया जाता है। यह एक स्वर्गीय समूह है जो सिंहासन के सामने खड़ा है। हालाँकि, मुझे लगता है कि इन्हें एक ही समूह के रूप में लेने के कई कारण हैं, जिन्हें अलग-अलग दृष्टिकोण से देखा जाता है।

पहला कारण तो ये है. ध्यान आकर्षित करने वाली पहली चीज़ यह है, जो पहचान का सुझाव देती प्रतीत होती है। मुझे लगता है कि यह सबसे महत्वपूर्ण है।

जॉन जो सुनता है और जो देखता है, उसके बीच इस पाठ में आप जो अंतर पाते हैं, उस पर ध्यान दें। वही विरोधाभास जिससे हमें अध्याय 5 में परिचित कराया गया था। अब याद करें, और जो हमने कहा था वह अक्सर होता है, और हम इसे पूरे प्रकाशितवाक्य में कुछ बार देखेंगे, जॉन कुछ सुनेगा और फिर वह मुड़ेगा और कुछ देखेगा और जो वह देखता है उसका अर्थ यह होता है कि उसने क्या सुना था। और अक्सर, वह जो देखता और सुनता है वह वही चीज़ें होती हैं, लेकिन बस अलग-अलग दृष्टिकोण से देखी जाती हैं।

फिर से अध्याय 5 पर वापस जाएँ। जॉन क्या सुनता है? जब जॉन को स्वर्गीय सिंहासन कक्ष में जाने का विशेषाधिकार प्राप्त हुआ, तो उसने परमेश्वर को सिंहासन पर बैठा हुआ देखा। फिर वह अध्याय 5 में भगवान को अपने दाहिने हाथ में एक पुस्तक के साथ अपने सिंहासन पर देखता है।

वह पूरे ब्रह्मांड में किसी की तलाश में घूमता है, लेकिन उसे कोई योग्य व्यक्ति नहीं मिलता, और रोना शुरू कर देता है। और एक स्वर्गदूत ने रोने को रोककर उस से कहा, यहूदा के गोत्र का सिंह जयवन्त हो गया है। यूहन्ना ने सुना, कि यहूदा के गोत्र का सिंह, कोई योग्य व्यक्ति निकला है।

लेकिन जब जॉन देखता है और देखता है तो क्या होता है? वह क्या देखता है? वह यहूदा के गोत्र का कोई सिंह नहीं देखता; वह देखता है कि एक मेमना मारा गया है। दो बिल्कुल अलग आकृतियाँ और छवियाँ, एक शेर और एक मारा हुआ मेमना, फिर भी स्पष्ट रूप से जॉन दो अलग-अलग व्यक्तियों, दो अलग-अलग मसीहा को नहीं देख रहा है। संदर्भ में यह स्पष्ट है कि वह वही चीज़ देख रहा है।

बात बस इतनी है कि वह जो देखता और सुनता है वह एक-दूसरे की व्याख्या करता है। वह जो देखता है वह एक शेर है जो जीत जाता है, या जो वह सुनता है वह एक शेर है जो जीत जाता है, लेकिन जो वह देखता है वह एक मारा हुआ मेमना है जो व्याख्या करने में मदद करता है और हमें यह समझने में मदद करता है कि वह कैसे जीत गया है। यहूदा के गोत्र के सिंह के रूप में, मसीह कैसे विजय प्राप्त करता है? वह मारे गए मेमने की तरह विडंबनापूर्ण ढंग से विजय प्राप्त करता है।

जो, फिर से, उसी तरह है जैसे अध्याय 7 की शुरुआत में शक्तिशाली सेना पर विजय प्राप्त करती है। तो फिर, मुद्दा यह है कि जॉन जो सुनता और देखता है वह बिल्कुल एक ही चीज़ को संदर्भित करता है, फिर भी अलग-अलग छवियों में जो परस्पर एक-दूसरे की व्याख्या करते हैं। और मैं सुझाव दूँगा कि यहाँ बिल्कुल यही चल रहा है।

अध्याय 7, श्लोक 1 से 8 में, जॉन यही सुनता है। जॉन कहते हैं, मैंने उनकी संख्या सुनी, श्लोक 4, मैंने उन लोगों की संख्या सुनी जिन पर मुहर लगाई गई थी, 144,000। अब श्लोक 9 में ध्यान दें, इसके बाद मैंने देखा, और मेरे सामने एक बड़ा सिंहासन था।

अब, जॉन ने यही देखा। इसलिए जॉन ने इस्राएल के गोत्रों में से 144,000 मुहरबंद लोगों के बारे में सुना, जो परमेश्वर के लोगों को एक शक्तिशाली सेना के रूप में चित्रित करते हैं। और विशेष रूप से यदि हम इसे इस रूप में लेते हैं कि जॉन अब पुराने नियम की कल्पना का उपयोग ईश्वर के नए लोगों को संदर्भित करने के लिए कर रहा है, तो जॉन जो सुनता है, 144,000 की एक शक्तिशाली सेना, अब वह जो देखता है, उससे आगे की व्याख्या की जाती है, एक असंख्य भीड़ परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होकर, विजयी होकर।

तो, वे लोगों का एक ही समूह हैं लेकिन उन्हें अलग-अलग दृष्टिकोण से देखा जाता है। पहले मामले में, उन्हें सांसारिक परिप्रेक्ष्य से एक शक्तिशाली सेना के रूप में देखा जाता है जो अपने वफादार गवाह के माध्यम से युद्ध करती है, यहां तक कि पीड़ा और मृत्यु के बिंदु तक भी, जैसा कि मेम्रे ने किया था। और फिर श्लोक 9 और उसके बाद, अब उसी समूह को स्वर्गीय दृष्टिकोण से देख रहे हैं, अब असंख्य भीड़ के दृष्टिकोण से जो अब परमेश्वर के सामने विजयी है।

अब उन्होंने अपनी लड़ाई जीत ली है, और अब उन्हें अपना पुरस्कार मिल गया है, और अब वे परमेश्वर के सामने विजयी खड़े हैं। तो, एक ही समूह ने इसे अलग-अलग दृष्टिकोण से देखा। और सर्वनाशकारी प्रतीकवाद की प्रकृति को देखते हुए, ऐसे समूह के बीच विरोधाभास देखने की कोई आवश्यकता नहीं है जिसे गिना जा सकता है और ऐसे समूह के बीच जो नहीं किया जा सकता है,

क्योंकि, फिर से, जॉन एक ही समूह को अलग-अलग दृष्टिकोण से चित्रित करने के लिए अलग-अलग कल्पना का उपयोग कर रहा है।

पृथ्वी पर एक शक्तिशाली सेना जो शत्रुता के बावजूद, यहाँ तक कि पीड़ा और मृत्यु की स्थिति में भी, बाहर जाकर युद्ध करती है। अब, वह अलग-अलग इमेजरी का उपयोग करके एक ही समूह की कल्पना करता है। वह उसी समूह को ईश्वर के सिंहासन के सामने विजयी होकर खड़ा देखता है और अब अपना स्वर्गीय पुरस्कार प्राप्त कर रहा है।

और ताड़ की शाखाएँ पकड़े हुए सिंहासन के सामने खड़ी होती है। हमने कहा कि सफेद वस्त्र पवित्रता और धार्मिकता और शायद जीत का भी संकेत दे सकते हैं। और उन चीजों में से एक जिसका संकेत ताड़ की शाखाएँ भी दे सकती थीं, वह थी जीत।

तो इस तथ्य को देखते हुए कि वे सफेद वस्त्र पहनते हैं और ताड़ की शाखाएँ पकड़ते हैं, इससे यह तथ्य जुड़ जाएगा कि अब वे विजयी हैं। 1 से 8 तक की शक्तिशाली सेना ने अब अपने पीड़ित वफादार गवाह के माध्यम से जीत हासिल कर ली है। वे अब परमेश्वर की उपस्थिति में विजयी हुए हैं।

इसलिए मैं फिर से आपको सुझाव दूंगा कि दो अलग-अलग समूहों के बजाय, हमारे पास लोगों का एक ही समूह हो। अर्थात्, परमेश्वर के लोग प्रत्येक जनजाति के यहूदी और गैर-यहूदी लोगों से बने हैं, और भाषा और जीभ को दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से चित्रित किया गया है। अब, एक प्रश्न यह है कि पद 9 में यहूदों इस समूह को असंख्य भीड़, प्रत्येक गोत्र के लोगों के समूह के रूप में क्यों वर्णित करता है? ध्यान दें कि यह वाक्यांश पूरे प्रकाशितवाक्य में सात बार फिर से आता है।

प्रत्येक राष्ट्र, जनजाति, लोग और भाषा, उसका कोई न कोई संस्करण या भिन्नता, प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में सात बार आती है। लेकिन वह उन्हें असंख्य भीड़ के रूप में क्यों वर्णित करता है, जो अब फिर से स्वर्ग में विजयी हुई है? संभवतः, इसका एक कारण यह हो सकता है, आप अध्याय 2 और 3 में सात चर्चों में लोगों के एक समूह के लिए लगभग मनोवैज्ञानिक रूप से कल्पना कर सकते हैं, लोगों के एक समूह के लिए जो रोमन साम्राज्य में अपने विश्वास को जीने की कोशिश कर रहे हैं, विशेष रूप से दो चर्च जो हैं अपनी पीड़ा के प्रति वफादार, अक्सर पीड़ा और उत्पीड़न की स्थितियों में, कोई यह सोचने के लिए प्रलोभित हो सकता है कि वे केवल एक महत्वहीन अल्पसंख्यक हैं। और अब, उन्हें असंख्य भीड़ के रूप में चित्रित करके, लेखक यह प्रदर्शित करना चाहता है कि, नहीं, वे एक तुच्छ अल्पसंख्यक नहीं हैं।

वे केवल एक छोटा सा सम्मेलन नहीं हैं जो केवल रोमन साम्राज्य की इच्छा पर आधारित है। परन्तु अब वह कहता है, नहीं, वास्तव में, तुम उस बड़ी भीड़ में से हो जिसकी गिनती नहीं की जा सकती। वह असंख्य भीड़ का एक कार्य हो सकता है।

लेकिन मुझे लगता है कि एक और भी महत्वपूर्ण बात है। मेरी राय में, विशाल जनसमूह की यह भाषा, जिसे कोई गिन नहीं सकता, पुराने नियम की पृष्ठभूमि से भी मेल खाती है। और यदि आप पुराने नियम की कहानी की पृष्ठभूमि के बारे में थोड़ा सा सोचते हैं, और फिर से जॉन इसमें से

अधिकांश को मानता है, विशेष रूप से भविष्यवाणी साहित्य, लेकिन जॉन भविष्यवाणी साहित्य तक ही सीमित नहीं है।

वह निर्गमन की ओर वापस चला जाता है। वह निर्गमन की कहानी मानता है। वह सृष्टि कथा मानता है।

और जब आप पुराने नियम की कहानी के बारे में सोचते हैं, तो आपको ऐसे लोगों का समूह या भीड़ कहां मिलती है जिन्हें गिना नहीं जा सकता? आप इसे कई बार इब्राहीम से किए गए वादों के संबंध में पाते हैं। बार-बार याद रखें, इब्राहीम, अध्याय 12 से शुरू करते हुए, जब भगवान ने वादा किया कि वह एक महान राष्ट्र होगा, उससे एक महान राष्ट्र आएगा, और अंततः पृथ्वी के सभी राष्ट्र धन्य हो जाएंगे। जब वह वादा संपूर्ण उत्पत्ति में इब्राहीम के साथ की गई वाचा में दोहराया जाता है, तो आप इस विचार को कई बार कहते हुए पाते हैं कि इब्राहीम का वंश और उसकी संतान एक दिन इतनी अधिक हो जाएंगी कि वे आकाश के तारों से भी अधिक संख्या में होंगी।

या एक दिन इब्राहीम की संतान इतनी अधिक हो जाएगी कि वह समुद्र के किनारे की रेत से भी अधिक हो जाएगी। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति अध्याय 13 और श्लोक 16 में उस विचार की पहली पुनरावृत्तियों में से एक है। और पद 16, 15 पढ़ने के लिए, परमेश्वर ने उससे प्रतिज्ञा की है कि वह सारी भूमि जो तू देख रहा है मैं तुझे और तेरे वंश को सदा के लिये दूंगा।

पद 16, मैं तेरे वंश को भूमि की धूल के समान बनाऊंगा, कि यदि कोई धूल को गिन सके, तो तेरा वंश भी गिन सके। और विचार यह है कि दुनिया में कौन कभी धूल के कण गिन सकता है? विचार कोई नहीं है। और इब्राहीम की संतानें इतनी ही असंख्य होंगी।

एक और उदाहरण, अध्याय 15 और पद 15। हालाँकि, तुम, इब्राहीम, शांति से अपने पिता के पास जाओगे और अच्छी बुढ़ापे में दफनाए जाओगे। चौथी पीढ़ी में तेरे वंश के लोग यहीं से लौट आएंगे, क्योंकि एमोरियों का पाप अपने पूरे परिमाण तक नहीं पहुंचा है।

यह वह नहीं है जो मैं चाहता था। दरअसल, 15 श्लोक 5. मुझे क्षमा करें, मैंने कहा 15. 15 श्लोक 5. वह उसे बाहर ले गया।

परमेश्वर ने इब्राहीम को बाहर ले जाकर कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण गिन। यदि तू उन्हें गिन सके, तो उस ने उस से कहा; तेरा वंश ऐसा ही होगा। अर्थात् इब्राहीम की संतान अनगिनत होगी।

कोई भी संभवतः इब्राहीम की संतानों की गिनती नहीं कर सकता। अध्याय 22 में एक अंतिम। उसी विषय की पुनरावृत्ति में।

अध्याय 22. और पद 17 में मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा।

भगवान इब्राहीम से बात कर रहे हैं। मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा, और तेरे वंश को आकाश के तारों और समुद्र के किनारे की बालू के किनारों के समान अनगिनत करूंगा। तेरे वंशज अपने शत्रुओं के नगरों पर अधिकार कर लेंगे।

तो संपूर्ण उत्पत्ति में आपके पास यह विषय है: ईश्वर ने इब्राहीम से वादा किया है कि उसका वंश या उसके वंशज असंख्य होंगे। वे इतने महान होंगे कि कोई उन्हें गिन नहीं सकेगा। इससे अधिक कि आप आकाश के सभी तारों या समुद्र के किनारे की रेत या धूल के सभी कणों को गिन न सकें।

इब्राहीम की संतानें इतनी ही असंख्य हैं। मुझे लगता है कि जॉन यहाँ इसी भाषा का चित्रण कर रहा है। तो दोनों छवियाँ पुराने नियम से आती हैं।

इस्राएल के गोत्रों की कल्पना और उनकी संख्या, साथ ही भीड़ जिसे कोई गिन नहीं सकता था, दोनों पुराने नियम की छवियाँ हैं जो इज़राइल पर लागू होती हैं। तो ऐसा नहीं है कि पहला इज़राइली है और दूसरा नहीं है।

ये दोनों सीधे पुराने नियम से आते हैं, और दोनों इज़राइल राष्ट्र पर लागू होते हैं। और यहां तो असंख्य भीड़ है। मुझे यह दिलचस्प लगता है कि जॉन, कम से कम इस छवि में नहीं उठाता; वह उत्पत्ति 12 में इस विषय को स्पष्ट रूप से नहीं उठाता है कि इब्राहीम सभी राष्ट्रों के लिए एक आशीर्वाद होगा।

दिलचस्प बात यह है कि, इसके बजाय, वह इब्राहीम के भौतिक बीज के वादे को उठाता है कि यह तारे से अधिक असंख्य होगा, कि यह इतना महान होगा कि कोई भी इसकी गिनती नहीं कर सकता है। लेकिन अब जॉन एक अर्थ में इब्राहीम की शारीरिक संतान, जातीय इज़राइल से किए गए वादे की पुनर्व्याख्या करता है, और अब वह इसे हर राष्ट्र, जनजाति, भाषा और लोगों से बने समूह पर लागू करता है। जैसा कि जॉन ने पहले आठ छंदों में किया था और इज़राइल की 12 जनजातियों की भाषा ली और उनकी सैन्य ताकत निर्धारित करने के लिए उनकी गिनती की और उसे यहूदियों और अन्यजातियों से बने भगवान के नए लोगों पर लागू किया, अब वह इसके साथ भी ऐसा ही करता है एक बड़ी भीड़ की भाषा जिसे कोई गिन नहीं सकता।

दूसरे शब्दों में, इब्राहीम से किए गए वादों की पूर्ति में कि इब्राहीम का भौतिक बीज आकाश के तारों और समुद्र की रेत से भी अधिक होगा, इतना असंख्य कि कोई भी गिन नहीं सकता, जॉन अब इसे लेता है और इसकी अंतिम पूर्ति पाता है एक बड़ी भीड़ जो केवल भौतिक इसराइल तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका विस्तार हर जनजाति और भाषा और भाषा और राष्ट्र के लोगों को शामिल करने के लिए किया गया है। तो फिर से, मेरा कहना है, और मुझे लगता है कि इसे समझना महत्वपूर्ण है, ये दोनों छवियाँ, इज़राइल की 12 जनजातियों में से प्रत्येक के 144,000 और असंख्य भीड़, दोनों पुराने नियम की भाषा पर आधारित हैं जो पुराने नियम के इज़राइल का संदर्भ देती है, अब इसे लागू कर रही है परमेश्वर के नए लोगों, चर्च के लिए। इसलिए, इब्राहीम को असंख्य वंशजों से किए गए वादे को पूरा करने में, वे वंशज विजयी हुए।

और दिलचस्प बात यह है कि मेरे द्वारा पढ़े गए कुछ पाठों पर ध्यान दें, विशेष रूप से आखिरी वाला, इसे उनके दुश्मनों पर उनकी जीत से जोड़ा गया है, खासकर उत्पत्ति अध्याय 22। अब असंख्य भीड़ अपने वफादार पीड़ित गवाह के माध्यम से अपने दुश्मनों पर विजयी रही है। अब इब्राहीम से किए गए वादों को पूरा करने में, उसके वंशज भगवान की उपस्थिति में अपने दुश्मनों पर विजयी होते हैं और अपना इनाम प्राप्त करते हैं।

लेकिन फिर, वंशजों में हर भाषा, जनजाति और राष्ट्र के लोग शामिल हैं, जिनमें विशेष रूप से इज़राइल शामिल नहीं है। आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए दो अन्य विशेषताएं। उनमें से एक का उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं, तथ्य यह है कि वे सफ़ेद वस्त्र और ताड़ की शाखाएँ रखते हैं, जो हमने सुझाया था कि संभवतः सैन्य जीत को चित्रित करता है।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि ये भी झोपड़ियों के पर्व की विशेषताएं थीं और इसे यहां चित्रित किया जा रहा है कि यह दृश्य झोपड़ियों के पर्व की अंतिम पूर्ति है, जिसे हम लैब्रिकस की पुस्तक में मनाया जाता है और जो प्रदर्शित करता है, उदाहरण के लिए, भगवान की सुरक्षा जब वह अपने लोगों को मिस्र से बाहर ले गया। और यह यहाँ निश्चित रूप से संभव है। अब, लोग अपने पलायन के लक्ष्य तक पहुंच गए हैं, और वह है दावत मनाना, अब भगवान की उपस्थिति का जश्न मनाना।

यह संभव है, हालाँकि फिर भी, इसका अधिकांश भाग केवल सफ़ेद वस्त्रों और ताड़ की शाखाओं पर आधारित है, जो निश्चित नहीं है कि झोपड़ियों के पर्व को मनाने के लिए यह पर्याप्त है या नहीं। यह संभव है, लेकिन यह निश्चित नहीं है, इसलिए मैं इसे वहीं छोड़ दूँगा। दूसरा पद 9 में महान क्लेश के इस संदर्भ पर ध्यान देना है, जो विशाल भीड़ के वर्णन का पहला पद है।

इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और मेरे साम्हने श्वेत वस्त्र पहिने हुए एक ऐसी बड़ी भीड़ खड़ी थी जिसे कोई गिन नहीं सकता था। दरअसल, पाठ में आगे बढ़ने के लिए जहां जॉन देवदूत से पूछना शुरू करता है कि ये व्यक्ति कौन थे, देवदूत अंततः उसे बताता है कि ये वे लोग हैं जो महान क्लेश से बाहर आए हैं। उन्होंने अपने वस्त्र धोए हैं, उन्हें मेमने के खून में सफ़ेद किया है, जो फिर से पवित्रता और धार्मिकता और अब शायद जीत का भी प्रतीक है।

लेकिन यह महान क्लेश क्या है? खैर, इसे कहीं और देखें। मुझे लगता है कि यह विचार पूरे रहस्योद्घाटन में स्पष्ट हो जाता है, लेकिन संभवतः महान क्लेश, हालाँकि रहस्योद्घाटन के कई ईसाई व्याख्याकार इसे इतिहास के बिल्कुल अंत में एक विशिष्ट अवधि के रूप में देखते हैं, कुछ हद तक वास्तविक सात साल की अवधि के साथ जुड़ा हुआ है, लेकिन कई लोग ऐसा करेंगे इसे इस रूप में लें कि महान क्लेश इतिहास के बिल्कुल अंत में ईसा मसीह के दूसरे आगमन की प्रस्तावना के रूप में एक विशिष्ट अवधि है। हालाँकि, मेरी राय में, जब आप शेष पुस्तक को एक साथ रखते हैं, तो मुझे लगता है कि महान क्लेश संभवतः ईसा मसीह के दूसरे आगमन तक ईश्वर के लोगों के अस्तित्व की पूरी अवधि का वर्णन करता है।

एक अवधि को क्लेश, परेशानी की अवधि के रूप में वर्णित किया गया है। जैसा कि हमने पहले ही देखा है, यह रोम जैसे प्रमुख साम्राज्यों के हाथों, जानवर के हाथों पीड़ा और यहां तक कि

उत्पीड़न का समय है, जो अंततः प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 में भगवान और उसके लोगों को नष्ट करने के शैतान के प्रयास में अपनी प्रेरणा देता है।, तो शायद महान क्लेश भगवान के लोगों के अस्तित्व की पूरी अवधि को संदर्भित करता है, चर्च के अस्तित्व की पूरी अवधि जब तक कि मसीह वापस नहीं आता। तो, पहले से ही, पहली सदी में लोग महान क्लेश के दौर में जी रहे थे।

क्लेश का उद्घाटन पहले ही हो चुका था। परमेश्वर के लोगों ने पहले ही रोमन साम्राज्य के हाथों, उन लोगों के हाथों क्लेश सहना शुरू कर दिया था जो उन पर अत्याचार करते थे और जो उनका विरोध करते थे। उदाहरण के लिए, एंटीपास जैसे लोगों को रोम के हाथों कष्ट सहना पड़ा और जॉन को विश्वास था कि शत्रुतापूर्ण रोमन साम्राज्य के सामने वफादार गवाह के कारण उन्हें कष्ट सहना पड़ेगा।

इसलिए महान क्लेश शायद एक अंतिम अवधि तक सीमित नहीं होना चाहिए, हालांकि कोई यह मान सकता है कि यह अवधि क्लेश के अंतिम प्रकोप में बढ़ती रहेगी, जो तब कट जाएगी जब मसीह अपने दूसरे आगमन पर न्याय लाने के लिए वापस आएगा। और मोक्ष। लेकिन एक ही समय में, महान क्लेश को महसूस करने के लिए संभवतः पहली शताब्दी से शुरू होने वाली पूरी अवधि, रोमन साम्राज्य के तहत उत्पीड़न के फैलने से शुरू होती है, शायद डोमिनियन से भी पहले। यदि यह पुस्तक डोमिनियन के तहत लिखी गई है, तो शायद नीरो के साथ भी शुरू हो सकती है, शायद रोमन शासन के तहत यीशु मसीह की मृत्यु और शहादत के साथ भी।

यीशु की मृत्यु और रोम के अधीन उत्पीड़न के प्रकोप से शुरू होने वाली यह पूरी अवधि अब क्लेश की इस अवधि का उद्घाटन करती है जो केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर समाप्त होगी। और यह पूरा काल महासंकट का काल है। और अब ये लोग संकट के इस दौर से विजयी होकर उभरे हैं और वे स्वर्ग में अपना पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं।

अब, इस अध्याय से संबंधित एक अन्य प्रश्न यह है कि यह घटना कब घटित होती है। दिलचस्प बात यह है कि दो संभावनाएं हैं और शायद वे विशिष्ट नहीं हैं, लेकिन एक यह है कि यह एक ऐसा दृश्य हो सकता है जो वफादार पीड़ितों की मृत्यु के तुरंत बाद घटित होता है। जो लोग मृत्यु तक पहुँचने तक अपनी वफादार गवाही के कारण कष्ट सहते हैं, वे तुरंत अपनी विरासत में प्रवेश कर जाते हैं। वे सिंहासन के सामने विजयी खड़े हैं।

और इसलिए आपके पास एक स्वर्गीय सिंहासन का दृश्य है जिसमें भगवान के सभी वफादार लोग अब सफेद वस्त्र पहने हुए हैं जैसा कि उनसे वादा किया गया है, उदाहरण के लिए, दूसरे चर्चों को लिखे गए पत्रों में। तो अब वे स्वर्गीय सिंहासन के सामने खड़े हैं। लेकिन अंत में एक और संभावना नजर आती है, आखिरी दो या तीन छंदों में, तीन छंदों में, आपके पास एक गीत होता है जो एक अर्थ में गाया जाता है, या कम से कम आपके पास काव्यात्मक या भजनात्मक रूप में पंक्तियों की एक श्रृंखला होती है अधिकांश अंग्रेजी अनुवाद.

और मुझे उन्हें दोबारा पढ़ने दीजिए. और इसलिए, वे, हर कुल, भाषा और भाषा से यह असंख्य भीड़, परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं। वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं, और उसके मन्दिर में दिन रात उसकी सेवा करते हैं।

जो सिंहासन पर बैठा है वह उन पर वास करेगा, वा उनके ऊपर तम्बू वा तम्बू तानेगा। वे फिर कभी भूखे न रहेंगे; वे फिर कभी प्यासे न होंगे। उन पर न तो सूर्य की किरण पड़ेगी, न भीषण गर्मी, क्योंकि मेम्ना सिंहासन के मध्य में होगा और उनका चरवाहा होगा।

वह उन्हें जीवन के जल के स्रोतों तक ले जाएगा। परमेश्वर उनकी आंखों से हर आंसू पोंछ देगा। अब, दो बातें.

सबसे पहले, यह दिलचस्प है कि इसे असंख्य भीड़ के रूप में वर्णित किया गया है, जो अंतिमता का सुझाव देती प्रतीत होती है या अंतिम पूर्ण समूह का सुझाव देती प्रतीत होती है। लेकिन दूसरा, इनमें से कुछ पाठ मैंने अभी-अभी पढ़े हैं, दिलचस्प बात यह है कि जब आप प्रकाशितवाक्य 21 पर पहुँचते हैं, तो यह पुराने नियम के पाठों का एक प्रकार है। जब आप प्रकाशितवाक्य 21 पर पहुँचते हैं, तो वही पाठ फिर से सामने आते हैं।

हर कोई याद करता है और याद करता है कि भगवान उनकी आंखों से आंसू पोंछ देंगे। और उन पर तम्बू बनाकर या तम्बू बनाकर बैठे मेम्ने की भाषा अध्याय 21, पद 3 की याद दिलाती है, कि परमेश्वर, एक नई वाचा के रिश्ते में, अपना निवास स्थापित करेगा या उसका निवास उनके साथ होगा। उसका तम्बू और तम्बू उसकी प्रजा के साथ रहेगा।

उन्हें फिर कभी भूख और प्यास नहीं लगेगी। उन्हें जीवित जल के झरनों तक ले जाना अध्याय 21 में घटित होता है। इसलिए मुझे आश्चर्य है कि क्या यह अध्याय 21 और 22 में नई सृष्टि की एक झलक या स्नेपशॉट की तरह नहीं है, जो पहले से ही घटित होने वाले पूर्ण विवरण की प्रत्याशा में है, जहां स्वर्ग है वास्तव में अध्याय 21 और 22 में पृथ्वी पर आता है।

यहां हमें एक तरह का स्नेपशॉट मिलता है, भगवान के लोगों की उनकी अंतिम विरासत में प्रवेश की एक झलक। यह प्राथमिक रूप से, यदि होगा भी नहीं, तो उनकी मृत्यु और संतों के स्वर्ग जाने पर तुरंत क्या होता है, इसका एक दृश्य होगा, लेकिन यह भगवान के उन सभी लोगों का एक संपूर्ण दृश्य होगा जो वफादार रहे हैं और अब भगवान के सामने खड़े होकर अपना पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं।, यह असंख्य भीड़, और अब वे अपनी विरासत में प्रवेश करते हैं, नई रचना जिसे उठाया जाएगा और अधिक विस्तार से वर्णित किया जाएगा जब हम प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 पर पहुंचेंगे। तो यह एक तरह से तेजी से आगे बढ़ने वाली झलक है कि इसमें क्या खुलता है फिर और अधिक विवरण.

तो, संक्षेप में, अध्याय 7 का उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है कि क्लेश की अवधि के दौरान और पृथ्वी पर भगवान के न्याय की अवधि के दौरान, दुष्ट रोमन साम्राज्य पर, और संभवतः किसी भी अन्य साम्राज्य पर जो अग्रणी भूमिका निभाएगा अंतिम निर्णय तक, कौन उसके विरुद्ध खड़ा होने में सक्षम है? जॉन उस प्रश्न का उत्तर अध्याय 6 में देता है। जो लोग खड़े हो सकते हैं वे वे हैं जो परमेश्वर के नए लोगों, चर्च से संबंधित हैं, जिन्हें सील कर दिया गया है और संरक्षित किया गया है, जिन्हें इज़राइल की कल्पना की पूर्ति में एक शक्तिशाली सेना के रूप में चित्रित किया गया है और अपने शत्रुओं को परास्त करना। अब, परमेश्वर के लोग लड़ाई और युद्ध में शामिल होने के लिए

बाहर जाते हैं, लेकिन वे ऐसा अपनी पीड़ित गवाही के माध्यम से करते हैं। लगभग विडंबना यह है कि, हथियारों के माध्यम से नहीं, बल्कि अपने वफादार गवाहों की पीड़ा के माध्यम से।

और फिर, यदि वे ऐसा करते हैं, तो वे इब्राहीम से किए गए वादे को पूरा करने में भगवान की उपस्थिति में विजयी होंगे कि उसके वंशज आकाश के सितारों और समुद्र की रेत से भी अधिक होंगे और वे अपने दुश्मनों को हरा देंगे। अब वे परमेश्वर की उपस्थिति में विजयी हुए हैं, और भविष्य में तेजी से आगे बढ़ने वाली झलक के रूप में, वे अब अपनी विरासत प्राप्त करते हैं, अर्थात्, नई सृष्टि में जीवन। भगवान की उपस्थिति में जीवन।

इसलिए वे पुरस्कृत और निर्दोष साबित होते हैं। अब फिर, रहस्योद्घाटन यहीं रुक सकता है। आपने न्याय का दृश्य देखा है, और अब आपके पास अंतिम मुक्ति का दृश्य है।

लेकिन हमने रहस्योद्घाटन कहा; यह इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि रहस्योद्घाटन कैसे चक्रीय है। अब, जॉन अलग-अलग छवियों का उपयोग करके और एक अलग दृष्टिकोण से समान घटनाओं और समान स्थितियों का समर्थन और वर्णन करने जा रहा है। इसलिए हमें अंत तक पहुंचने के लिए अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है, लेकिन जॉन पहले ही उस तक पहुंच चुका है।

अब, केवल रोमन साम्राज्य और दुष्ट मानवता पर वर्तमान में भगवान के फैसले का वर्णन करके, भगवान के लोगों को क्या करना है, उनकी पीड़ा की प्रकृति का वर्णन करके, गवाह, अग्रणी का वर्णन करके अंत में एक और रन लेना है। फिर अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के अनुमोदन, अपने लोगों के प्रति उसके प्रतिफल और उनके शत्रुओं के प्रति उसके न्याय तक। दूसरी बात जो आपको अध्याय 7 में देखनी चाहिए वह यह है कि यह अध्याय 2 और 3 में चर्चों से कैसे संबंधित है। कम से कम दो चर्चों के लिए, लेकिन कुछ अन्य चर्चों के लिए भी जो उगमगा रहे हैं, कुछ चर्चों को याद रखें जॉन के माध्यम से बोलते हुए यीशु मसीह के पास उनके बारे में कहने के लिए कुछ सकारात्मक बातें थीं, हालांकि अभी भी ऐसे क्षेत्र थे जहां मसीह उनकी आध्यात्मिक स्थिति या उनकी गवाही की कमी के बारे में चिंतित थे। उन चर्चों और उन व्यक्तियों के लिए, यह अध्याय दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहन का स्रोत होगा।

दुख के बावजूद भी, वे वास्तव में जीत हासिल कर रहे हैं। यह परमेश्वर का उनके लिए विजयी होने और कष्ट सहने की स्थिति में भी अपनी वफादार गवाही के माध्यम से अपना राज्य स्थापित करने का साधन है। और यह उन्हें यह भी याद दिलाएगा कि यदि वे दृढ़ रहें, तो परिणाम यह होगा कि एक दिन उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा और वे वफादार बने रहेंगे।

एक बड़ी भीड़ के हिस्से के रूप में, न कि एक महत्वहीन छोटे अल्पसंख्यक के रूप में, चाहे वे रोमन साम्राज्य की नज़र में कितने भी दिखाई दें, वे वास्तव में एक बड़ी भीड़ के रूप में उभरेंगे और विजयी होंगे और यदि वे दृढ़ रहेंगे तो उन्हें अपना इनाम मिलेगा। हालांकि, कई चर्च, जिनमें से कई को जॉन ने संबोधित किया था, विपरीत दिशा में गिर सकते हैं। वे स्वयं को उन लोगों के रूप में पा सकते हैं जो ईश्वर की विपत्तियों के अधीन हैं, ऐसे लोगों के रूप में जो विजयी नहीं होते

हैं, जैसे कि वे जो वास्तव में उन लोगों के साथ हैं जो ईश्वर के लोगों को नुकसान पहुँचाते हैं और ईश्वर के लोगों पर अत्याचार करते हैं।

एकमात्र विकल्प पश्चाताप करना और मसीह में अपनी वफादार गवाही बनाए रखना है, भले ही इसका मतलब उनकी पीड़ा और मृत्यु हो। अध्याय 8, फिर, अध्याय 7 के बाद, मुहर संख्या 6 और मुहर संख्या 7 के बीच एक अंतराल की तरह, अध्याय 8 अब मुहर अनुक्रम को फिर से शुरू करेगा। दूसरी बात का उल्लेख करना है, दूसरी बात जो एक भ्रम या एक अंतराल कर सकता है, दूसरी चीज जो एक अंतराल कर सकता है वह है जब आप मुहरों और होने वाली सभी बुराईयों और सभी अराजकता और निर्णय के दर्शन, कभी-कभी मुहरों को पढ़ते हैं लगभग वस्तुतः एक संक्षिप्त राहत के रूप में कार्य करता है और कार्रवाई को धीमा कर देता है और सील के अगले हमले से पहले आपको अपनी सांस लेने में मदद करने का लगभग एक तरीका है।

फिर, यही एकमात्र चीज़ नहीं है जो वे करते हैं। हमने कहा कि अध्याय 7 के कार्यों में अंतराल में घटनाओं की व्याख्या करने और अध्याय 6 में क्या हो रहा है, इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक कार्य है, अध्याय 6 में जो हो रहा है उसके बीच में कौन खड़ा हो सकता है? अध्याय 6 में जो चल रहा है उससे परमेश्वर के लोगों का क्या संबंध है? इसलिए इसकी एक महत्वपूर्ण धार्मिक भूमिका है, लेकिन साथ ही, यह पृथ्वी पर आने वाली विपत्तियों और बुरी विपत्तियों के बीच लगभग एक राहत या एक संक्षिप्त विराम प्रदान करता है। यह हमें अध्याय 8 पर लाता है, जहां सील अनुक्रम फिर से शुरू होता है।

और हमने कहा कि अध्याय 7 इस प्रश्न का उत्तर देता है कि कौन खड़ा हो सकता है? यह अध्याय 8 पर भी लागू हो सकता है। अध्याय 8 में जो चल रहा है उसके विरुद्ध कौन खड़ा हो सकता है? हम अध्याय 8 में देखेंगे कि अध्याय 8 और 9 में वर्णित तुरही की विपत्तियाँ केवल उन लोगों के लिए लक्षित हैं जिन पर मुहर नहीं लगाई गई है और जिन्हें अध्याय 7 से मुहर नहीं मिली है। फिर, यह खंड पृथ्वी पर भगवान के फैसले को फिर से शुरू करेगा। इस प्रश्न का उत्तर देने के बाद कि चल रही विपत्तियों से परमेश्वर के लोगों का क्या संबंध है, अब हम पाते हैं कि प्लेग क्रम फिर से शुरू होने जा रहा है, लेकिन अध्याय 8 के पहले कुछ छंदों में सातवीं मुहर खोले जाने के बाद ही। तो यहाँ आखिरी मुहर है, सातवीं मुहर।

और फिर, इसके बाद, यह सात तुरहियों के क्रम की ओर ले जाएगा, जिसे हम इसी तरह देखेंगे कि यह छठे और सातवें के बीच टूट जाएगा, लेकिन हम इसे बाद में देखेंगे। लेकिन अध्याय 8 में इस सातवीं मुहर के बारे में जो दिलचस्प बात है, जैसा कि हम देखेंगे, स्पष्ट रूप से जब सील अंततः खोली जाती है तो कुछ नहीं होता है। लेकिन इससे पहले कि हम उस पर गौर करें, मैं अध्याय 8 और 9 पढ़ना चाहता हूँ। हम पहले अध्याय 8 पढ़ेंगे, और फिर हम वापस जाएंगे और उत्तर देंगे कि सातवीं मुहर क्या है? क्योंकि, फिर, जाहिरा तौर पर, कुछ नहीं होता है।

इसके बजाय, यह कहता है कि स्वर्ग में आधे घंटे का मौन है। यह खोली गई अन्य छह मुहरों से बहुत अलग है। लेकिन आइए अध्याय 8 को पढ़कर शुरुआत करें। फिर, सात स्वर्गदूत, जिनके पास सात तुरहियाँ थीं, उन्हें बजाने के लिए तैयार हुए।

पहले स्वर्गदूत ने तुरही बजाई, और खून से मिश्रित ओले और आग आने लगी। और उसे पृथ्वी पर पटक दिया गया। पृथ्वी का एक तिहाई भाग जल गया, और एक तिहाई पेड़ जल गए, और सारी हरी घास भी जल गई।

दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही बजाई, और एक विशाल पर्वत जैसी कोई चीज़, पूरी तरह से जलती हुई, समुद्र में फेंक दी गई। समुद्र का एक तिहाई भाग रक्त में बदल गया। समुद्र के एक तिहाई जीवित प्राणी मर गए, और एक तिहाई जहाज नष्ट हो गए।

तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, और मशाल के समान चमकता हुआ एक बड़ा तारा आकाश से एक तिहाई नदियों और जल के स्रोतों पर गिरा। तारे का नाम वर्मवुड है। पानी का एक तिहाई भाग कड़वा हो गया, और बहुत से लोग उस पानी के कारण मर गये जो कड़वा हो गया था।

चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, और सूर्य का एक तिहाई भाग, चंद्रमा का एक तिहाई भाग, और तारों का एक तिहाई भाग नष्ट हो गया, यहां तक कि उनमें से एक तिहाई अंधकारमय हो गया। दिन का एक तिहाई हिस्सा बिना रोशनी के था और रात का भी एक तिहाई हिस्सा बिना रोशनी के था। और जब मैं ने देखा, तो मैं ने एक उकाब को जो तुरही के शब्द के कारण जो अन्य तीन स्वर्गदूत फूँकने ही वाले थे, ऊंचे शब्द से चिल्लाते हुए सुना, हे पृथ्वी के निवासियों पर हाय, हाय, हाय।

और मैं यहीं रुकूंगा, लेकिन अध्याय 9 तो, शायद हमें यहां अध्याय विराम नहीं करना चाहिए, क्योंकि अध्याय 9 तुरही क्रम को जारी रखता है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि, जैसा कि हम देखेंगे, अगले तीन तुरहियां पहले चार से बजाई जाती हैं, ठीक उसी तरह जैसे पहले चार घोड़े, पहली चार मुहरें, शेष तीन से बजाई जाती थीं। और हमें वही पैटर्न यहां मिलता है।

तो, अध्याय 8 में पहले चार तुरहियाँ एक इकाई का निर्माण करती हैं, और फिर, अध्याय 9 अंतिम तीन तुरहियों का वर्णन करना शुरू करता है। जैसा कि हमने पहले कहा है, मुहरों की तरह, छठी और सातवीं तुरही को एक अंतराल से अलग किया जाएगा, जो फिर से, केवल एक विषयांतर नहीं है, बल्कि हम अध्याय 8 और में क्या चल रहा है इसकी आगे व्याख्या करने के लिए वास्तविक कार्यों को देखेंगे। 9. यह दर्शन के वर्णन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण धार्मिक भूमिका निभाता है। परन्तु तुरही अध्याय 7 और अध्याय 9 छठी तुरही के साथ समाप्त होंगे।

तुरही अध्याय 7 वास्तव में बाद में अध्याय 11, श्लोक 15 से 19 में घटित होगा। हम पाएंगे कि सातवीं तुरही अंततः बज गई है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि सातवीं मुहर अंततः अध्याय 8 की शुरुआत में ही खोल दी जाती है। और जैसा कि मैंने कहा, इसमें अजीब बात यह है कि स्पष्ट रूप से कुछ भी नहीं होता है।

जैसे ही सातवीं मुहर खोली जाती है, तो बस इतना ही पता चलता है कि स्वर्ग में लगभग आधे घंटे तक सन्नाटा था। और उम्मीद है, जैसा कि आपने अब तक समझ लिया है, हमें शायद उस आधे घंटे को शाब्दिक रूप से आधे घंटे के रूप में नहीं लेना चाहिए, कि अगर आपकी घड़ी चालू होती, तो आप मिनट की सुई को चेहरे के आधे हिस्से के आसपास जाते हुए देख सकते थे घड़ी,

और फिर यह समय समाप्त हो जाएगा। लेकिन आधा घंटा, शायद फिर से कुछ महत्वपूर्ण, लेकिन कुछ सीमित, कुछ ऐसा सुझा रहा है जो हमेशा के लिए नहीं रहता।

अब सवाल ये है कि आधे घंटे तक ये सत्राटा क्यों? जो मुझे पहली नज़र में वास्तव में सील की अधिकांश सामग्री के रूप में प्रतीत नहीं होता है। जब आप अन्य 6 मुहरें पढ़ते हैं, तो कुछ बहुत विशिष्ट घटित होता है। सील 5 को छोड़कर, जो वेदी के नीचे चिल्लाती हुई आत्माओं का दर्शन है, अन्य सभी रोमन साम्राज्य और दुष्ट, ईश्वरविहीन, मूर्तिपूजक मानवता पर ईश्वर के सक्रिय निर्णय हैं जो उसे स्वीकार करने से इनकार करते हैं और इसके बजाय संतों पर अत्याचार करते हैं।

लेकिन अब अचानक आपकी सील खुल जाती है और बस सत्राटा छा जाता है। और वास्तव में कुछ नहीं होता। इस वजह से, कई लोग सुझाव देते हैं कि सील नंबर 7 वास्तव में, जैसा कि हमने कहा, एक दूरबीन की तरह जिसे आप बाहर निकालते रहते हैं, प्रत्येक खंड में इसके अंदर अन्य खंड होते हैं।

कुछ लोग सुझाव देंगे कि मुहर संख्या 7 में वास्तव में उनके अंदर अगले सभी सात तुरहियाँ शामिल हैं। यह पूरी तरह संभव है। हालाँकि, मुझे फिर से आश्चर्य होता है कि क्या चुप्पी कोई अलग भूमिका नहीं निभाती है और शायद पुराने नियम की पृष्ठभूमि के प्रकाश में एक भूमिका निभाती है।

मुझे लगता है कि चुप्पी को सील के हिस्से के रूप में देखने के तीन संभावित तरीके हैं। पहला है, और टिप्पणियों ने इन 3 का सुझाव दिया है, और कुछ अन्य भी हैं, लेकिन मैं केवल इस पर ध्यान केंद्रित कर रहा हूँ कि 3 सबसे संभावित समाधान या 3 सबसे आम क्या हो सकते हैं। उनमें से एक यह है कि मौन केवल क्रिया में एक नाटकीय विराम प्रदान करता है।

जैसा कि हमने अंतराल के साथ कहा था, आप अब तक मुहरों पर वापस जाते हैं, और एक के बाद एक निर्णय आते रहे हैं, और यह भगवान के अंतिम निर्णय के प्रतीकात्मक चित्रण के रूप में ब्रह्मांड के विनाश के इस प्रलयकारी दृश्य के साथ समाप्त होता है। और परमेश्वर के क्रोध और मेमे के क्रोध का दिन। अब, निर्णय के अगले दौर, जो कि 8 और 9 में होने वाला है, से पहले चुप्पी एक प्रकार की राहत या कार्रवाई में विराम प्रदान करती है। इसलिए, यह एक बार फिर अपनी सांस लेने और जो होने वाला है उसके लिए तैयार होने का एक मौका है। आगे आने वाला हूँ. यह पूरी तरह से संभव है और निश्चित रूप से यहां समझ में आता है।

हालाँकि, दो अन्य संभावित कार्य। नंबर 1 है, या नंबर 2, नंबर 1 कार्रवाई में एक नाटकीय विराम है, नंबर 2 मौन है, शायद मौन हो सकता है ताकि संतों की प्रार्थना सुनी जा सके, जो वास्तव में मौन के बाद आगे होता है। उन स्वर्गदूतों से परिचय कराया गया जो ईश्वर के सामने खड़े हैं और उनके पास सात तुरहियाँ हैं, लेकिन वे कुछ छंदों तक तुरहियाँ नहीं बजाते। इसके बजाय, आपके पास एक स्वर्गदूत की छवि है जो वेदी के पास जा रहा है और अपनी हौदी, अपना धूपदान, वेदी के कोयले से भर रहा है, या मुझे खेद है, वेदी से धूप, जिसमें संतों की प्रार्थनाएं भी शामिल हैं, जो भगवान को अर्पित किये जाते हैं।

फिर, हमने उस विषय को पहले ही देख लिया है कि विचार यह है कि जो निर्णय आने वाले हैं उन्हें संतों की प्रार्थनाओं के जवाब के रूप में देखा जाना चाहिए। हम इसे पढ़ते हैं, उस पाठ को याद करते हैं जो हमने 1 हनोक से और विशेष रूप से 4 वें एज्रा से पढ़ा था, कि संतों की प्रार्थनाएँ, प्रार्थनाएँ हमेशा उन संतों की ओर से की जाती हैं जो पीड़ित हैं, ताकि यहाँ, संतों की प्रार्थनाएँ संभवतः आगे बढ़ें वापस जाएँ और अध्याय 6 को याद करें, शहीदों की पुकार, हे प्रभु, कब तक। और इसलिए, यह मौन इसलिए हो सकता है ताकि संतों की प्रार्थना सुनी जा सके, यह दर्शाता है कि अब अध्याय 8 और 9 में शेष निर्णय विशेष रूप से संतों की प्रार्थना का जवाब हैं।

तीसरी संभावना यह भी है कि पुराने नियम में, चुप्पी अक्सर एक चुप्पी होती है जो आने वाले फैसले की प्रत्याशा में होती है। ईश्वर का निर्णय और ईश्वर का हस्तक्षेप निर्णय के रूप में आता है। एक चुप्पी आने वाले आसन्न फैसले के आलोक में एक तरह से विस्मय की प्रतिक्रिया है।

और यह निश्चित रूप से समझ में आएगा। सातवीं मुहर आने वाले फैसले के कारण चुप्पी है, जो अध्याय 8 और 9 हो सकता है, ये तुरही निर्णय। लेकिन मैंने यह भी देखा है कि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे पास अध्याय 8 में पहले से ही एक और निर्णय है, जिसमें हमने कहा था कि मुहरों, तुरही और कटोरे की प्रत्येक श्रृंखला आपको अंत तक ले आती है।

अध्याय 8 में, मुझे खेद है, अध्याय 6 में, सबसे आखिरी मुहर में, हमने ब्रह्मांड के विघटन की छवि देखी और लोग कह रहे थे, हमें छुपा लो क्योंकि भगवान के क्रोध का महान दिन मौजूद है। अध्याय 8 में, सातवीं मुहर अब हमें प्रभु के दिन में ला सकती है क्योंकि ध्यान दें कि पद 5 में क्या होता है। फिर स्वर्गदूत, एक धूपदान लेता है और उसे धूप से भर देता है, जो संतों की प्रार्थना है, और यह ईश्वर तक जाता है, संभवतः प्रतिशोध की पुकार, प्रार्थना कि संतों का बदला लिया जाएगा, उनके खून का बदला लिया जाएगा, उन्हें निर्दोष ठहराया जाएगा।

अब, देवदूत वेदी के पास जाता है और अपने धूपदान को आग से भरता है और उसे पृथ्वी पर फेंक देता है, जो न्याय का एक प्रतीकात्मक कार्य है। और अब, फिर से, निर्णय की भाषा पर ध्यान दें, जिसे लेखक ने फिर से पुराने नियम से उठाया है। और गड़गड़ाहट, गड़गड़ाहट, बिजली की चमक और भूकंप आया।

दूसरे शब्दों में, यह सब मिलकर सातवीं मुहर की सामग्री हो सकती है। जैसे ही सातवीं मुहर खुली होती है, निर्णय होता है, हां, दृश्य में एक प्रकार के विराम के लिए, लेकिन इसलिए भी कि संतों की प्रार्थनाएं सुनी जा सकें और भगवान के फैसले की प्रत्याशा के रूप में भी। और फिर वह न्याय, वह अंतिम न्याय, पृथ्वी पर फेंकी गई आग और गड़गड़ाहट, बिजली की चमक और भूकंप के रूप में आता है।

और इसलिए यहां, फिर से, हमारे पास एक प्रकार का सारांश है। यहां हमें बिल्कुल अंत तक लाया गया है। यहाँ हम अंततः, फिर से, प्रभु के दिन और अंतिम न्याय के लिए लाए गए हैं।

अध्याय 8 के छंद 3 और 4 के बारे में कुछ अन्य बातों का उल्लेख करने के लिए, वास्तव में दो चीजें हैं जिन पर मैं जोर देना चाहता हूँ। सबसे पहले, एक बार फिर से, मंदिर की सभी कल्पनाओं

पर ध्यान दें, जिसमें स्वर्गीय सिंहासन कक्ष को एक मंदिर के रूप में चित्रित किया गया है। यहाँ, जाहिरा तौर पर, दृश्य फिर से बदल जाता है, अध्याय 7 से जॉन स्वर्ग में वापस आ गया है या शायद जॉन अभी भी स्वर्ग में है। अध्याय 7 जॉन द्वारा स्वर्ग में सिंहासन के सामने भीड़ को देखने के साथ समाप्त हुआ।

अब, अपने स्वर्गीय दृष्टिकोण से, वह देवदूत को स्वर्ग के संदर्भ में एक मंदिर के रूप में देखता है। वेदी पर ध्यान दें, जो यहां पुराने नियम में धूप की वेदी को भी प्रतिबिंबित करती प्रतीत होती है। धूपदानी जो मंदिर के बर्तनों में से एक थी और आग और कोयले की भाषा थी।

तो यहाँ हमारे पास स्पष्ट रूप से स्वर्ग की एक तस्वीर है जिसे एक मंदिर के रूप में चित्रित किया गया है और शायद देवदूत पुजारी के रूप में कार्य कर रहे हैं। लेकिन यहां प्राथमिक लक्ष्य यह है कि वे न केवल भगवान के लिए संतों की प्रार्थनाओं में मध्यस्थता करने में शामिल हैं, वे प्रार्थनाएं जो शायद न्याय और बदला या प्रतिशोध के लिए चिल्लाती हैं, बल्कि सातवीं मुहर के अंतिम निर्णय में भी शामिल हैं जो पद 5 में दी गई है। फिर, मौन के साथ, पद 5 फिर मुहर संख्या 7 का निर्णय है। तो आपके पास श्लोक 3-4 में जारी एक स्वर्गीय अदालत कक्ष की यह तस्वीर है। दूसरी चीज़ नोटिस है, और यही वह चीज़ है जो कभी-कभी रहस्योद्घाटन को रेखांकित करने में बहुत मुश्किल बना देती है कि क्या वास्तव में हमें यही करना चाहिए।

और यह दिलचस्प है जब आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की रूपरेखा देखते हैं, तो वे वास्तव में इस प्रकार के स्थानों पर संघर्ष करते हैं। यह दिलचस्प है कि 8, 1-5 वास्तव में सातवीं मुहर और सात तुरहियों को ओवरलैप करते हुए समाप्त होता है। क्योंकि ध्यान दें, यदि श्लोक 5 सातवीं मुहर की सामग्री का हिस्सा है, तो ध्यान दें श्लोक 2 में आपका परिचय पहले ही हो चुका है, मैंने सात स्वर्गदूतों को देखा जो भगवान के सामने खड़े थे और उन्हें सात तुरहियाँ दी गईं।

लेकिन फिर छंद 3-5 सील संख्या 7 की सामग्री पर लौटता प्रतीत होता है, जहां देवदूत संतों की प्रार्थना करता है और फिर वेदी से अंगारों के रूप में भगवान के फैसले को बाहर निकालने के लिए तैयार होता है। बहुत दिलचस्प बात यह है कि अध्याय 2 में सात स्वर्गदूतों का परिचय दिया गया है, फिर भी वे कुछ नहीं करते हैं। वे श्लोक 6 तक कुछ नहीं करते हैं। तो आपके पास यह इंटरलॉकिंग है; विद्वान अक्सर इसे एक इंटरलॉकिंग फीचर कहते हैं, और अन्य चीजें भी हैं जो वे इसे कहते हैं, लेकिन जो भी मामला है, आपके पास ऐसे अनुभाग हैं जो इंटरलॉक और ओवरलैप करते हैं जहां एक अनुभाग समाप्त होता है जबकि उसी समय, दूसरा अभी शुरू हो रहा है जो जारी रहेगा।

यह इसे बहुत कठिन बना देता है, जिसमें सील 6 और सील 7 और बाद में तुरही 6 और 7 को बाधित करने वाले अंतराल भी शामिल हैं। ये अंतराल, रहस्योद्घाटन की ये इंटरलॉकिंग विशेषताएं, एक आसान, सटीक रूपरेखा के साथ आना बहुत मुश्किल बनाती हैं। रहस्योद्घाटन की पुस्तक क्योंकि चीजें एक तरह से आपस में जुड़ी हुई हैं, या जैसा कि हमने कहा है, ऐसे अंतराल हैं जो अनुक्रमों को बाधित करते हैं जैसा कि हम मुहरों और तुरहियों के साथ पाते हैं। तो अध्याय 6 से शुरू करते हुए, अब जबकि सात मुहरें खोल दी गई हैं, जिसकी सामग्री शायद मौन है और श्लोक 5 का निर्णय भी है, लेखक हमें श्लोक 5 के साथ अंत तक ले आया है, प्रभु का दिन,

वह जा रहा है बैक अप लें और तुरहियों के रूप में निर्णयों की एक और श्रृंखला सुनाएँ। अध्याय 6 में, मुझे क्षमा करें, अध्याय 8 में, श्लोक 6 से प्रारंभ करके अध्याय के अंत तक और फिर अध्याय 9 में, हमें सात तुरहियों से परिचित कराया जाता है, और जैसे ही प्रत्येक तुरही फूँकी जाती है, पृथ्वी पर कुछ घटित होता है या समुद्र.

और इन तुरहियों में से एक में स्वर्ग में भी कुछ घटित होने वाला है। हमने यह भी कहा कि अध्याय 9 तुरही क्रम को जारी रखता है लेकिन हम पाते हैं कि तीन चीजें चल रही हैं। पहला, अध्याय 8, हमें चार तुरहियों से परिचित कराता है जो पहली चार मुहरों की तरह एक दूसरे से निकटता से संबंधित हैं।

फिर, अगली तीन तुरहियाँ एक-दूसरे से संबंधित प्रतीत होती हैं और उनका अपना एक चरित्र प्रतीत होता है क्योंकि उन्हें श्लोक 13 में एक देवदूत प्राणी या एक उकाब द्वारा कहे गए तीन गुना शोक द्वारा प्रस्तुत किया गया है। तो, श्लोक 13 में, हमें एक उकाब से परिचित कराया जाता है, और वह तीन गुना दुःख जारी करता है, जिसके बारे में वह हमें बताता है कि यह अगले तीन तुरहियों से मेल खाता है। उनमें से दो तुरहियों के बारे में अध्याय 9 में कुछ विस्तार से बताया जाएगा। वह तुरहियाँ 5 और 6 होंगी। फिर, सातवीं तुरही, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, सातवीं तुरही है, जो संभवतः तीसरी विपत्ति से मेल खाती है।

इसलिए, यदि आप इसका अनुसरण कर रहे हैं, तो अध्याय 8 हमें तीन संकटों से परिचित कराते हुए शुरू होता है जो अंतिम तीन तुरहियों के अनुरूप हैं। तो तुरही 5 और 6 को दुःख 1 और 2 होना चाहिए। और फिर तुरही सात को दुःख 3 होगा। लेकिन फिर, तुरही संख्या 7 को अध्याय 10 और अध्याय 11 के अधिकांश भाग से युक्त एक अंतराल द्वारा 6 से अलग किया गया है। और फिर, अध्याय में 11, श्लोक 15-19, हम अंततः तुरही संख्या 7 की ध्वनि सुनते हैं, जो संभवतः तीसरी विपत्ति है जिससे चील हमें यहाँ परिचित कराती है।

इसे समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक सामान्य टिप्पणी के रूप में है, इससे पहले कि हम तुरही को थोड़ा और विस्तार से या जितना संभव हो उतना विस्तार से देखें। मुझे लगता है कि जब आप इसे पढ़ते हैं, तो सटीक रूप से पता लगाना थोड़ा मुश्किल हो जाता है, जो हो रहा है उसकी प्रतीकात्मक प्रकृति को देखते हुए और जिस भाषा का उपयोग किया जाता है, उसे देखते हुए, यह निर्धारित करना थोड़ा मुश्किल है कि इन तुरहियों में वास्तव में क्या शामिल है। लेकिन स्पष्ट रूप से, वे पृथ्वी पर परमेश्वर का न्याय हैं।

लेकिन शुरुआत में ही ध्यान देने योग्य एक महत्वपूर्ण बात यह है कि जब आप इन्हें पढ़ते हैं, जैसा कि मैंने अभी पढ़ा है, जब आप इन ट्रम्पेट प्लेग को ध्यान से पढ़ते हैं, तो आप मदद नहीं कर सकते, लेकिन ध्यान दें, जैसा कि कई टिप्पणियों में बताया गया है, और यदि आप कुछ टिप्पणियों को देखते हैं, वे इसे चार्ट के रूप में भी प्रस्तुत करेंगे ताकि आप इसे आसानी से देख सकें, क्या एक बार फिर हमें इन्हें समझने के लिए पुराने नियम में वापस जाना होगा, और वह है एक्सोडस विपत्तियों पर वापस जाना। जब आप इन विपत्तियों को पढ़ते हैं, अध्याय 8 और 9 में भी ये तुरही विपत्तियाँ, निर्गमन के साथ समानताएँ, हालाँकि निर्गमन में दस विपत्तियों के समान क्रम में नहीं हैं, और फिर से जॉन पूर्णता, परिपूर्णता को इंगित करने के लिए संख्या 7 का उपयोग करता है।

इस समय पृथ्वी पर परमेश्वर के निर्णयों की पूर्णता, संपूर्ण, उत्तम संख्या। विभिन्न संख्याओं के अलावा, जॉन फिर से संख्या 7 का उपयोग कर रहा है, और अलग क्रम में; इनमें से अधिकांश मिस्र पर फैली विपत्तियों में से एक से मिलते जुलते हैं।

उदाहरण के लिए, जब आप इसे पढ़ते हैं, तो पहला प्लेग ओलों का प्लेग होता है जो मिस्र की प्लेग से मिलता-जुलता है। दूसरा पानी को खून में बदल रहा है और ऐसा बना रहा है कि यह हो ही नहीं सकता; यह पीने के लिए अनुपयुक्त था, इसलिए इसे पीने से कुछ लोगों की मृत्यु भी हो गई। एक और नक्षत्रों को अंधकारमय कर रहा है, इसलिए दिन का तीसरा भाग अंधकारमय था, जो मिस्र की विपत्तियों में से एक जैसा था।

बाद में अध्याय 9 में, हमें टिड्डियों की एक महामारी से परिचित कराया जाएगा जिसकी एक से अधिक पुराने नियम की पृष्ठभूमि है, लेकिन उनमें से कम से कम एक मिस्र की महामारी में से एक है। इसलिए, मुझे लगता है, जॉन सावधानीपूर्वक मॉडलिंग कर रहा है, और हम यह भी देखेंगे कि जॉन के साथ यह कोई नई बात नहीं है। अन्य सर्वनाशों ने अक्सर अंतिम समय के निर्णयों को चित्रित करने के लिए एक्सोडस प्लेग की कल्पना का सहारा लिया।

हालाँकि, जॉन स्पष्ट रूप से अपने स्वयं के निर्णयों को चित्रित करने के लिए निर्गमन की विपत्तियों का उपयोग करता है, इसलिए जॉन जो करना चाहता है वह प्रदर्शित करना है, मुझे लगता है, भगवान के निर्णय का धार्मिक महत्व। दूसरे शब्दों में, इसका मुख्य बिंदु निर्णयों की सटीक श्रृंखला की भविष्यवाणी करना नहीं है। वास्तव में, मुझे लगता है कि जॉन ने निर्गमन को जिस तथ्य के रूप में चित्रित किया है, वह अब प्रतीकात्मक रूप से रोम और एक दुष्ट दुनिया पर भगवान के फैसले का वर्णन करने के लिए विपत्तियों का उपयोग कर रहा है, जो दूसरे आगमन की ओर ले जाता है।

यही तथ्य यह सटीक रूप से पहचानना मुश्किल बना देता है कि ये क्या हैं। फिर, जॉन की मुख्य चिंता ईश्वर के फैसले का वर्णन करने के लिए प्रतीकात्मक रूप से निर्गमन विपत्तियों का उपयोग करना है। इसलिए मैंने कहा कि मुझे लगता है कि सटीक रूप से यह पहचानने से अधिक महत्वपूर्ण है कि ये क्या हैं और वे कैसे दिखते हैं या वे कैसे दिखेंगे, जॉन द्वारा बताए जा रहे धर्मशास्त्रीय बिंदु को समझना है और यह केवल विशिष्ट भविष्य के निर्णयों की एक श्रृंखला की भविष्यवाणी करना नहीं है, बल्कि धर्मशास्त्रीय रूप से भी है। भगवान के फैसले के बारे में कुछ कहने के लिए।

और यह उसी तरह है, जैसे कि भगवान ने एक दुष्ट, मूर्तिपूजक, अत्याचारी राष्ट्र का न्याय किया था, जो कि अतीत में मिस्र का राष्ट्र है, अपने लोगों को बचाने और छुड़ाने और उन्हें भूमि में लाने के लिए एक प्रस्तावना के रूप में भगवान उसी तरह से न्याय कर रहे हैं एक दुष्ट, दुष्ट, मूर्तिपूजक राष्ट्र रोम और कोई भी अन्य राष्ट्र जो ईश्वर की प्रत्याशा में उनके कदमों का अनुसरण करने की परवाह करता है और एक प्रस्तावना के रूप में एक बार फिर अपने लोगों को बचाएगा और उन्हें उनकी विरासत में ले जाएगा जो अंततः प्रकाशितवाक्य 21 की नई रचना है और 22. तो इसका मुख्य बिंदु निर्गमन के मूल भाव को जागृत करना है, हमें यह अनुमान लगाने के लिए प्रेरित नहीं करना है कि ये वास्तव में क्या दिखेंगे, ये कैसे दिखेंगे, निश्चित रूप से इन सभी तिहाई को जोड़ना

नहीं है और यह कहना है कि अच्छा, हमारे पास अब इतने सारे लोग जीवित हैं, इसलिए वास्तव में एक तिहाई को नुकसान होगा या पृथ्वी की सतह का इतना बड़ा हिस्सा पानी और पेड़ों से ढका हुआ है और यहाँ वास्तव में कितना होगा, यह जॉन का मुद्दा नहीं है, फिर से उनका मुद्दा निर्गमन को ईश्वर के फैसले के बारे में कुछ कहने के लिए प्रेरित करना है ताकि मदद करके धार्मिक महत्व पर जोर दिया जा सके। हमें निर्गमन के साथ संबंध स्थापित करने और अपना ध्यान वापस निर्गमन की ओर आकर्षित करने के लिए प्रेरित करके हम निर्गमन को याद करते हैं, जिस तरह से भगवान ने अतीत में एक दमनकारी दुष्ट साम्राज्य का न्याय किया था, इसलिए अब एक प्रस्तावना के रूप में परमेश्वर फिर से एक दमनकारी, मूर्तिपूजक दुष्ट, ईश्वरविहीन साम्राज्य का न्याय कर रहा है। और अपने लोगों को छुड़ाने की प्रत्याशा में, जैसा कि हमने पहले ही देखा है, वे पहले से ही एक अन्य निर्गमन विषय का उपयोग कर रहे हैं, पहले से ही भगवान ने लोगों के लिए पुजारियों का राज्य बनाया है, यही कारण है कि भगवान ने इज़राइल को मिस्र से बाहर निकाला, अब एक बार फिर भगवान ने पुजारियों का राज्य बनाया है और उन्हें इस दमनकारी दुष्ट साम्राज्य से छुटकारा दिला रहा है और उन्हें उनकी विरासत में लाएगा जो हमने फिर से कहा कि यह प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की नई रचना होगी अब अगले सत्र में हम निर्गमन कनेक्शन के महत्व के बारे में कुछ अन्य टिप्पणियाँ करेंगे। और फिर यह समझने का प्रयास करें कि ये तुरही की विपत्तियाँ अध्याय 8 में और अध्याय 9 में भी क्या सुझाव दे सकती हैं।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र 13, रहस्योद्घाटन 7, भीड़, और अध्याय 8, अंतिम मुहर है।